IAS Mentorship
By Reyasat Ali Sir & Team | 9580393900 Call Telegram WhatsApp

2(a) व्यावसायिक आचरण के प्रति उनके दृष्टिकोण में सद्गुण नैतिकता और कर्तव्य नैतिकता कैसे भिन्न हैं? स्वास्थ्य सेवा और कानूनी व्यवसायों से उदाहरणों के साथ चर्चा कीजिए।

उत्तर: सद्गुण नैतिकता तथा कर्तव्य नैतिकता दोनों ही मानकीय नीति शास्त्र के परिणाम निरपेक्षवादी उपशाखा के दो अहम घटक हैं।

सद्गुण नैतिकता व कर्तव्य नैतिकता में अन्तर

सद्गुण नैतिकता	कर्तव्य नैतिकता
1. वही कार्य नैतिक जिसे एक सद्गुणी व्यक्ति नैतिक मानता हो।	1. वही कार्य नैतिक है जो कर्तव्यों के निर्वहन के क्रम में वांछनीय है।
2. सद्गुणों के अनुसार विवेक, साहस, संयम और न्याय मूलभूत सद्गुण हैं।	2. कान्ट ने 'ड्यूटी फॉर द सेव ऑफ ड्यूटी' की बात की है।
3. एक विधि अभ्यास में (वकील) के लिए केवल वही कार्य नैतिक हो सकता है जिससे अपराधी और पीड़ित दोनों को समान रूप से न्याय की प्राप्ति होता है।	3. इसके अनुसार एक वकील का कर्तव्य अपने क्लाईंट के पक्ष को अदालत में मजबूती से रखना होता है अतः इस क्रम में अपराधी का भी साथ देना नैतिक कृत्य माना जाएगा।

8090528260 Call Telegram WhatsApp Text

PDF Scanner ACE Scanner

Student Name:
Topic:
Date:

IAS Mentorship
With Reyasat Ali Sir & Team I 9580393900 Call Telegram WhatsApp

यथा बैरिस्टर के रूप में गांधी जी के द्वारा केवल पीड़ितों के पक्ष को ही रखने की नीति का अनुगमन।

यथा निर्भया मामले में वकील ए. पी. सिंह के द्वारा दोषियों के पक्ष को अदालत में मजबूती से रखना।

4. स्वास्थ्य पेशेवरों के लिए सद्गुण नीतिशास्त्र मरीजों के जीवन व कल्याण को पहली प्राथमिकता देने को ही नैतिक मानता है। यथा जोनास ओ सॉल्क के द्वारा पोलियो टीके का निर्माण किन्तु उसका पेटेंट न करवाया जाना।

5. मेडिकल एथिक्स के अधीन रहते हुए चिकित्सा पेशेवरों द्वारा अधिक से अधिक लाभ अर्जित करना भी नैतिक कृत्य माना जाता है। यथा COVID वैक्सीन को WTO के ट्रिप्स समझौते से उन्मुक्ति न दिया जाना।

गौरतलब है कि व्यावसायिक आचरण के प्रति दृष्टिकोण में भी इसी भिन्नता के कारण आचरण संहिता व नीति संहिता का निर्माण व अनुपालन आवश्यक हो जाता है।

PDF Scanner ACE Scanner

Q6 कौटिल्य के अर्थशास्त्र ने प्राचीन भारत में शासन के लिए नैतिक ढाँचा किस प्रकार प्रदान किया? आधुनिक लोक प्रशासन के लिए इसकी प्रासंगिकता पर चर्चा कीजिए।

उ०- कौटिल्य शासन में नैतिकता प्राचीन काल से ही नीति निर्माताओं और शासक वर्ग के लिये विचार का विषय रहा है क्योंकि इसका सीधा संबंध प्रजा के हित व राज्य के स्थायित्व से माना जाता है। कौटिल्य के अर्थशास्त्र में भी इसकी अभिव्यक्ति होती है।

अर्थशास्त्र में शासन के लिए प्रदत्त नैतिक ढाँचा तथा वर्तमान लोक प्रशासन में इसकी प्रासंगिकता

अर्थशास्त्र में निहित नैतिक ढाँचे	वर्तमान लोक प्रशासन में इसकी प्रासंगिकता
1. प्रजा का सुख सर्वोपरि- प्रजा का सुख ही राजा का सुख है।	1. सुशासन व स्वराज्य की अवधारणा के अनुरूप।
2. योग क्षेम का सिद्धांत :- राज्य का कर्तव्य संसाधनों की प्राप्ति तथा इसका संरक्षण करना दोनों ही है।	2. वर्तमान के आर्थिक विकास तथा राष्ट्र को बाह्य व आंतरिक खतरों सुरक्षित रखने की नीति के अनुरूप।

PDF Scanner ACE Scanner

IAS Mentorship
By Reyasat Ali Sir & Team | 9580393900 Call Telegram WhatsApp

2. लोक कल्याण की अवधारणा :- * राज्य का कर्तव्य लोगों के हितों का संरक्षण करते हुए इनका सर्वांगीण विकास करना।

3. राज्य के नीति निदेशक तत्वों में निहित लोक कल्याणकारी राज्य की अवधारणा के अनुरूप।

4. न्याय पर व साहस पर बल :- राजा को साहसी व न्यायशील होना चाहिए।

4. शासन 4.0 की अवधारणा के अनुरूप।

5. अब राज्य के शक्तियों का आधार केवल धर्म शास्त्र नहीं हैं अपितु अर्थशास्त्र भी अर्थात् राज्य न केवल पुराने कानूनों को लागू कराने में सक्षम अपितु नए कानूनों के निर्माण हेतु भी अधिकृत।

5. विधि द्वारा स्थापित प्रक्रिया और यथोचित विधिक प्रक्रिया के सिद्धांतों के अनुरूप।

ध्यातव्य है कि अर्थशास्त्र में साम, दाम, दण्ड, भेद के द्वारा राज्य के हितों के संरक्षण की बात की गई है जो आज के प्रतिस्पर्धी दुनिया में काफी प्रासंगिक प्रतीत होता है किन्तु इस क्रम में नैतिक सिद्धांतों की उपेक्षा नहीं की जानी चाहिए किन्तु

8090528260 Call Telegram WhatsApp Text

PDF Scanner ACE Scanner

Q(9) भय एक व्यापक मानवीय भावना है, जो सार्वजनिक सेवा और प्रशासन में विशेष रूप से हानिकारक हो सकती है। चर्चा करें कि भय किस तरह से लोक सेवकों में नकारात्मक भावनाओं और अवांछनीय व्यवहारों को जन्म दे सकता है। प्रशासनिक ढांचे के भीतर भय को कैसे प्रबंधित और नियंत्रित किया जा सकता है?

Ans. "भय तलवार से भी गहरा काटती है।" जार्ज मार्टिन का यह कथन सार्वजनिक सेवा व प्रशासन में भय से होने वाले नुकसान को इंगित करता है।

भय से ~~संबंधित~~ संभावित हानियाँ (लोक सेवा व प्रशासन में)

→ (1) अपनी सत्यनिष्ठा के साथ समझौता हेतु विवश।

(eg.) कई लोक सेवक पनिशमेंट पोस्टिंग व ट्रांसफर के भय से वरिष्ठों, राजनेताओं व अन्य प्रभावशाली लोगों के दबाव में अपनी सत्यनिष्ठा के से समझौता कर लेते हैं जबकि IAS अशोक खेमका ने अनेकों में 54 ट्रान्सफर देखे।

PDF Scanner ACE Scanner

→ ② सार्वजनिक सेवा मे नवाचारी प्रयास के लिए साहस न कर पाना।

e.g. → विफलता अथवा विरोध के भय से कई लोक सेवक "चलता है, चलने दो" की संस्कृति का पालन करते हैं, वहीं IAS अभिजीत बांगड़ ने नवीन सिंचाई जल लिफ्ट प्रणाली के द्वारा आदिवासियों के आय मे पाँच गुना की वृद्धि की।

→ ③ लोक व्यवस्था तथा लोक कल्याण के प्रति समर्पण से समझौता।

e.g. → IPS ए०के० रविकृष्णा से पूर्व अमरावती के अधिकांश पुलिस अधिक्षकों के द्वारा कुपात्कला गाँव की उपेक्षा।

प्रशासन में भय के प्रबंधन व नियमन हेतु उपाय।

① चयन के स्तर पर - मनोवैज्ञानिक परीक्षण तथा नैतिक साहस पर विशेष बल दिया जाना चाहिए।

② प्रशिक्षण के दौरान - मिशन कर्मयोगी जिसका उद्देश्य लोकसेवकों को सत्यनिष्ठ, सृजनात्मक, कुशल, दक्ष और निर्भीक बनाना है के अंतर्गत I GOT प्लेटफॉर्म का सही उपयोग किया जाए।

③ सेवाकाल के दौरान - भावनात्मक बुद्धिमता के संवर्द्धन तथा दण्ड एवं पुरस्कार की नीति अपनाई जाए।

ऐसे में लोक सेवा व प्रशासन मे भय को दूर करना सफल लोक सेवक व सक्षम प्रशासन दोनों के लिए आवश्यक है। एलेनोर रोसवेल्ट के शब्दों में "हमें भयभीत करने वाले एक कार्य रोजाना करना चाहिए।"

Student Name:	Ravi Raaz
Topic:	
Date:	

IAS Mentorship
With Reyasat Ali Sir & Team | 9580393900 Call Telegram WhatsApp

4(b) "सार्वजनिक सेवा मे समर्पण का दायरा नियमित कर्तव्यों से आगे बढ़कर संकट प्रबंधन और सामाजिक कल्याण को भी शामिल करता है।" इस कथन को ऐसे लोक सेवकों के उदाहरणों से स्पष्ट करें जिन्होंने अपनी आधिकारिक जिम्मेदारियों से ऊपर होकर कार्य किया है।

उ०- सार्वजनिक सेवा में समर्पण का आशय लोक कल्याण कार्यों के प्रति ऐसी गहरी निष्ठा से है जो व्यक्ति को इस हेतु क्रियाशील होने के लिए स्वतः प्रेरित करती है।

लोक कल्याण कारी राज्य की अवधारणा में निहित है कि सार्वजनिक सेवा में समर्पण नियमित कर्तव्यों के दायरे से आगे बढ़कर संकट प्रबंधन एवं सामाजिक कल्याण तक विस्तृत है।

संकट प्रबंधन के प्रति प्रतिबद्ध

→ ① **आपदा प्रबंधन के प्रति तत्पर** —
e.g. IAS कनन गोपी नाथन के द्वारा गुमनाम तरीके से केरल बाढ़ के प्रबंधन मे सक्रिय रहना।

→ ② **कानून व्यवस्था को बनाए रखना**
e.g.→ IPS A.K. Ravikrishna के द्वारा कुर्नुल के कप्पत्राला गाँव को गोद लिया जाना (कानून व्यवस्था स्थापित करने के लिये)

IAS Mentorship
By Reyasat Ali Sir & Team I 9580393900 Call Telegram WhatsApp

सामाजिक कल्याण के प्रति प्रतिबद्ध

→ ① विकासात्मक गतिविधियों को प्रोत्साहन

e.g. IAS आर्म स्ट्रांग पामे के द्वारा क्राउड फंडिंग से ही 100km लंबी सड़क का निर्माण।

→ ② लोगों के जीवन स्तर में सुधार (समावेशी विकास)

IAS संकरण के द्वारा बंधुआ मज़दूरी के उन्मूलन हेतु किया गया प्रयास।

→ ③ युवाओं को शिक्षा से जोड़कर मानव संसाधन के विकास को प्रोत्साहन

e.g. IAS सौरभ कुमार के द्वारा 'लंच विथ कलेक्टर" पहल की शुरुआत।

→ ④ अंधविश्वास से निपटने में सहायक

e.g. IAS राहुल कुमार के द्वारा पूर्णिया में तथाकथित निम्न जाति की विधवा महिला के हाथों से बने मध्यान्ह भोजन को ग्रहण किया जाना।

संविधान के भाग-IV में अभिव्यक्त कल्याणकारी राज्य की अवधारणा को मूर्त रूप देने के लिये यह आवश्यक है कि लोक सेवक अपने ~~भारत का~~ निर्धारित कर्तव्यों के साथ ही संकट प्रबंधन तथा सामाजिक कल्याण के प्रति भी प्रतिबद्ध रहे है।

8090528260 Call Telegram WhatsApp Text

PDF Scanner ACE Scanner

1(a) निर्णय लेने की प्रक्रियाओं में कृत्रिम बुद्धिमत्ता और मशीन लर्निंग टूल के उपयोग में शामिल नैतिक विचारों पर चर्चा कीजिए। प्रासंगिक उदाहरण दीजिए।

उत्तर:

हाल के दिनों में AI तथा मशीन लर्निंग के विकास के साथ ही निर्णयन में भी इनकी व्यापक भूमिका देखने को मिल रही। किन्तु इसमें स्पष्ट रूप से कई सकारात्मक व नकारात्मक नैतिक विचार निहित हैं।

सकारात्मक नैतिक विचार

1. निर्णयन की प्रक्रिया का अधिक **दक्ष और वस्तुनिष्ठ** होना।

e.g. भारतीय सर्वोच्च न्यायालय द्वारा 2021 में अपनाया SUPACE

2. निर्णयन का अपेक्षाकृत अधिक **पारदर्शी व उत्तरदायी** प्रक्रिया।

e.g. → हवाई अड्डे पर उपयोग किया जाने वाला डी.जी. यात्रा।

3. निर्णयन की प्रक्रिया का **मानकीकृत** तथा एक रूपी होना।

e.g. → दृष्टिबाधित लोगों के द्वारा उपयोग में लाया जाने वाला TALK BACK।

PDF Scanner ACE Scanner

नकरात्मक नैतिक विचार

① बौद्धिक संपदा अधिकारों का उल्लंघन।

e.g. अमेरिकी अदालतों में चैट जीपीटी के विरुद्ध दायर कॉपीराइट संबंधित मामले।

② मानव के सृजनात्मक क्षमता का AI व मशीन लर्निंग के द्वारा नकल किया जाना।

e.g. U.S.A में हॉलीवुड फिल्म निर्माताओं के विरुद्ध 2023 में कलाकारों के द्वारा चलाया गया आंदोलन।

③ निर्णयन की प्रक्रिया के यांत्रिकीत होने के कारण मानव संवेदना और परिस्थितिजनित कारकों की उपेक्षा।

e.g. →

इस संबंध में किए जा रहे प्रयास

1. ग्लोबल AI समिट का आयोजन
2. बैलेचली घोषणा पत्र
3. AI पर टोकियो दिशा निर्देश
4. DPDP अधिनियम 2023

किसी भी नई प्रौद्योगिकी का विकास अपने साथ कई अवसर तो कुछ जोखिम भी लाता है। ऐसे में अवसरों का समुचित लाभ लेते हुए जोखिम के निम्नीकरण हेतु उपयुक्त कानूनी, नीतिगत एवं अभिवृत्ति संबंधित उपाय किया जाना चाहिए।

PDF Scanner ACE Scanner

IAS Mentorship
With Reyasat Ali Sir & Team | 9580393900 Call Telegram WhatsApp

1(b) भारत में लोक सेवकों के व्यावसायिक आचरण पर व्यक्तिगत नैतिकता के प्रभाव का विश्लेषण कीजिये। सार्वजनिक अधिकारियों के लिये सार्वजनिक और निजी जीवन के बीच किस हद तक अलगाव होना चाहिए?

उत्तर:- "मनुष्य जैसा सोचता है वैसा ही करता है और वह वैसा ही होता है।" यह प्रसिद्ध उक्ति लोकसेवकों के व्यावसायिक आचरण पर व्यक्तिगत नैतिकता के पड़ने वाले प्रभाव से भी समझा जा सकता है-

सकारात्मक प्रभाव

(1) लोकसेवा के प्रति समर्पण को प्रोत्साहन।

e.g. → IAS हर्षिता सिंह के द्वारा स्वयं ही जरूरत पड़ने पर छात्रावास में जल भराव की समस्या को दूर करने के लिये सफ़ाई कार्य की शुरूआत करना।

(2) अपने व्यावसायिक सत्यनिष्ठा और शुचिता का संवर्धन।

e.g. → A.P.J. अब्दुल कलाम के द्वारा राष्ट्रपति भवन में अपना परिवार का खर्च स्वंय उठाना।

(3) लोकसेवा को अधिक लोकहितकारी, ~~करुणाशील~~ पर समाजसेवी बनाया जाना।

e.g. → IAS पी० नर० हरि के द्वारा ग्वालियर में दिव्यांग जनों के लिये बाधा मुक्त वातावरण बनाने का प्रयास।

PDF Scanner ACE Scanner

IAS Mentorship
By Reyasat Ali Sir & Team I 9580393900 Call Telegram WhatsApp

नकारात्मक प्रभाव

(i) लोकसेवा में औपनिवेशिक चेतना को प्रोत्साहन।

e.g. प्रशिक्षु आई० ए०एस० पूजा खेडकर के द्वारा तमाम सुख सुविधाएँ की मांग।

(ii) भ्रष्टाचार व रिश्वतखोरी को प्रोत्साहन।

e.g. 2021 बैच के आई० ए० एस० धीमन चकमा का 10 लाख लेते हुए गिरफ्तार होना।

सार्वजनिक और निजी जीवन के बीच अलगाव से जुड़े कुछ तथ्य

(I) सबसे अच्छा तो यह होगा कि सार्वजनिक व निजी जीवन दोनों में ही एकरूपता बनी रहे।

(II) ऐसे में व्यक्ति का निजी व सार्वजनिक जीवन (दोनों नहीं) नैतिक होना काम्य है। यथा० ए०पी०जे० अब्दुल कलाम

(III) किन्तु यदि कोई व्यक्ति निजी जीवन में नैतिकताओं का अनुपालन नहीं करता है फिर भी उसे सार्वजनिक जीवन में पूर्णतः नैतिक होना चाहिए। क्योंकि सार्वजनिक जीवन में किये गए कार्यों का अधिक व्यापक प्रभाव होता है।

वर्ष 2020 में शुरू किया गया मिशन कर्मयोगी तथा IGOT प्लेटफार्म सार्वजनिक जीवन में नैतिकता को प्रोत्साहित कर व्यवसायिक आचरण को मानवीय व नैतिक बनाने का ही प्रयास है।

8090528260 Call Telegram WhatsApp Text

ACE Scanner